IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 8, Series 1 (August, 2023) 61-69
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

अलवर जिले में मानव संसाधन एवं शैक्षिक विकास का मूल्यांकन

बबिता शर्मा
सहायक आचार्य–भूगोल , श्री कृष्णा महाविद्यालय, जालुकी, तहसील नगर, जिला डीग (राजस्थान)

शोध सारांश
मानव संसाधन किसी क्षेत्र विशेष का महत्वपूर्ण घटक है। जो विभिन्न संसाधनों का उपयोग अपनी आवश्यकताओं के अनुसार करता है। मनुष्य क्षेत्र विशेष के जैविक तथा अजैविक संसाधनों का दोहन कर प्राकृतिक पर्यावरण को भी परिवर्तित करता रहता है। भूमि, जल, खनिज, ऊर्जा, वनस्पति तथा जीव जन्तुओं का उपयोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करने के साथ–साथ मानव सांस्कृतिक पर्यावरण का निमार्ण करता है। जनसंख्या वृद्धि तथा विकास के बढ़ते आधुनिक आयाम के मद्देनजर मनुष्य भूमि का अधिकाधिक उपयोग करने के साथ–साथ उत्पादकता बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद का उपयोग जल संसाधन का दोहन अधिक करता है। मिट्टी अपरदन के बढ़ते स्तर को नियंत्रित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार सभी संसाधनों में मानव संसाधन की केन्द्रीय भूमिका रहती है। किसी भी स्थान / क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए हमें वहाँ के मानव संसाधन का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है, क्योंकि आज के युग में मानव / जनसंख्या ही हर कार्य का केन्द्र है। इसलिए मानव संसाधन का ज्ञान जरूरी है। 2011 कीजनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,85,48,437 है जबकि अलवर की जनसंख्या 36,74,179 है। अलवर जिले में सर्वाधिक जनसंख्या 7,03,856 अलवर तहसील की है तथा सबसे कम जनसंख्या 1,37,339 कोटकासिम तहसील की है। जनांकिकीय संरचना में मानव संसाधन के विभिन्न तत्वों को शामिल किया जाता है। जो इसकी अवस्थिति एवं विकास के घोतक है। इस शोध पत्र में अलवर ज़िले में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं शिक्षा का अध्ययन किया जाता है।
मुख्य बिन्दु :– अलवर जिला जनसंख्या , वृद्धि , वितरण , साक्षरता , शिक्षा विकास एवं निष्कर्ष ।

प्रस्तावना :–

मानव संसाधन विश्लेषण आर्थिक विकास की प्रक्रिया में जनशक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह उपलब्ध मानव संसाधनों के द्वारा वर्तमान एवं भविष्य की जनशक्ति आवश्यकताओं व संभावनाओं का परीक्षण करता है। मानव संसाधन विश्लेषण के द्वारा जनशक्ति में किए विनियोग के लिए नीति निर्धारण की जाती है जिसके द्वारा विकासशील राष्ट्रों के सीमित संसाधनों का कुशलता के साथ उपयोग हो सके। इसके द्वारा मानवसंसाधन का बेहतर उपयोग करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं का निर्दिष्टीकरण संभव होता है। मानव संसाधन विकास की मुख्य विधियों के द्वारा उन कुशलताओं व क्षमताओं के स्तरों के बारे में जाना जा सकता है जो उच्च प्रतिफल प्रदान करते हैं तथा आर्थिक विकास हेतु सहायक होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक सीमित संसाधन के बेहतर प्रयोग की संभावना बढ़ती है। मानव संसाधन विकास सामाजिक एवं आर्थिक विकास एक विस्तृत संकल्पना है , जो किसी इकाई क्षेत्र में केवल मानव विकास तक सीमित नहीं है , अपितु जन समूह की जीवन की गुणवत्ता से जुड़ी हुई है। सामाजिक सुविधाओं का विकास ग्रामीण लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन में सुधार करता है , किसी भी क्षेत्र के मानवीय कारकों का वहाँ के सामाजिक और आर्थिक विकास से सीधा सम्बन्ध होता है। मानव तथा वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन भूगोल में प्रारम्भ से होता आया है , जिसमें जनसंख्या एवं भौतिक तत्व भौगोलिक अध्ययन के समग्र रूप से आवश्यक तत्व रहे हैं। मानव संसाधन विश्लेषण आर्थिक विकास की प्रक्रिया में जनशक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह उपलब्ध मानव संसाधनों के द्वारा वर्तमान एवं भविष्य की जनशक्ति आवश्यकताओं व संभावनाओं का परीक्षण करता है। इस शोध अध्ययन के लिए जिला अलवर का चयन किया गया।

भौगोलिक स्थिति :–

जिला अलवर राजस्थान के उत्तर पूर्व में 27°4″ से 28°4″ उत्तरी अक्षांश तथा 67°4″ से 77°13″ पूर्वी देशान्तर के मध्य अरावली पर्वत श्रृखलाओं में स्थित है। आकार में अच्छा खासा चतुर्भुजाकार है। जिले की सीमायें पूर्व में भरतपुर पश्चिम में जयपुर दक्षिण

में जयपुर , दौसा , जिला तथा उत्तर में हरियाणा राज्य से घिरी हुई है। अलवर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8380 वर्ग कि . मी . है जो राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.45 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जिले की आकृति लगभग चैकोर है जो जिले के दक्षिणी पश्चिमी भागों में मुख्य अरावली श्रेणियों की निरन्तरता बनाये रखते हुए घाटियों के ऊँचें पठारों के रूप में विद्यमान है। जिले के मध्य भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर अरावली पहाड़ियों की ऊँचाई 456 मीटर से 700 मीटर है। जिले का यह भू – भाग जंगलों से परिपूर्ण है। जिले का पश्चिमी भाग रेतीला है जबकि मध्य भाग में पर्वतीय तथा पठारी भू – भाग है।

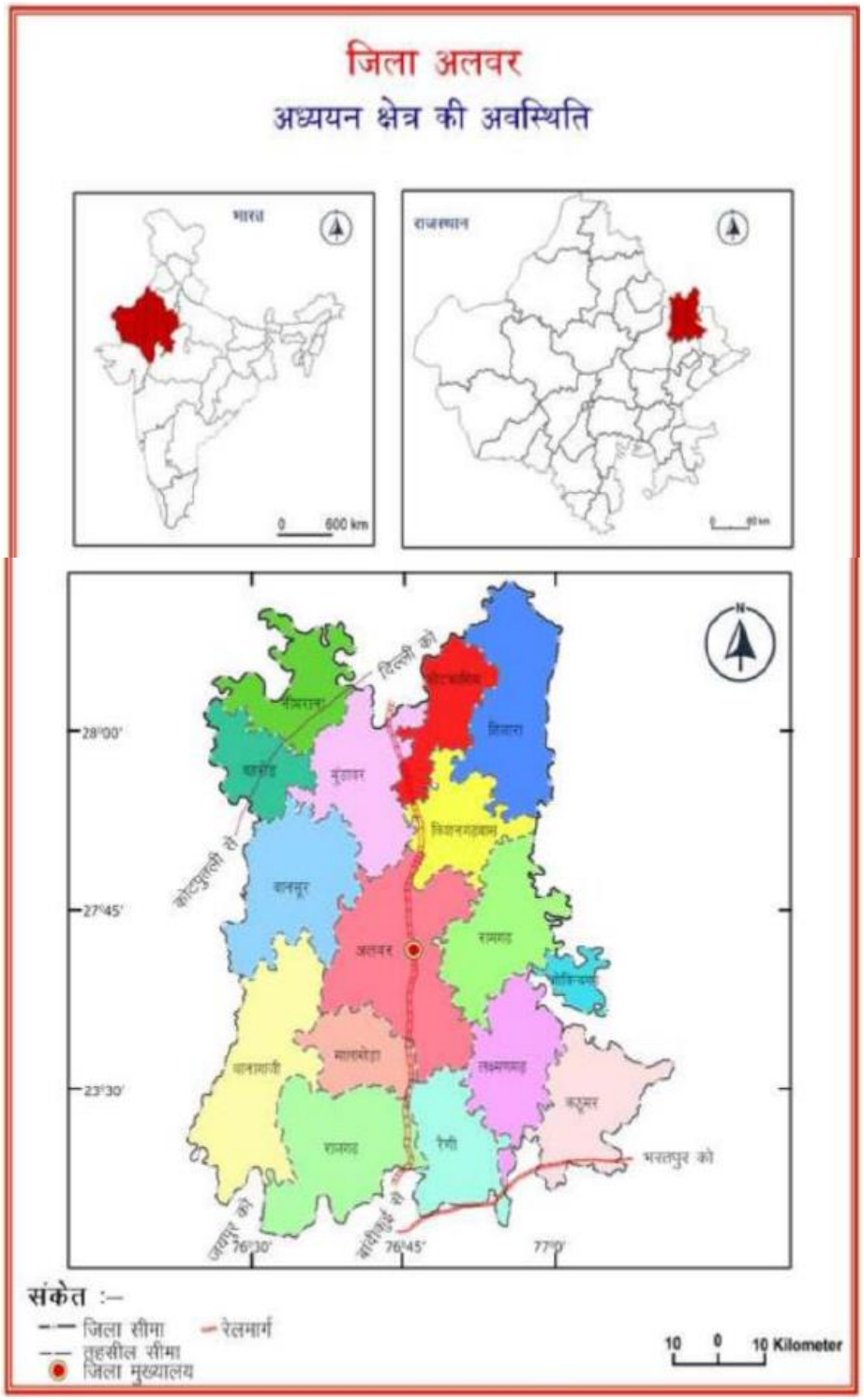

शोध अध्ययन का उद्देश्य :–

1. अलवर जिले में मानव संसाधन विकास अध्ययन किया गया।

2. अलवर जिले में शिक्षा विकास का अध्ययन किया गया है।

शोध परिकल्पना :–

1. अलवर जिले के मानव विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण हैं।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त समकों का प्रयोग किया जायेगा जिनके आधार पर समस्या का विश्लेषण कर सम्भावित शोध परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत :–

किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत अध्ययन में उपयोग हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ें एकत्रित किये गये हैं। विभिन्न विभागों में अभिलेखित आँकड़ों का एकत्रीकरण जनसांख्यिकी विभाग , अलवर , जिला कलेक्टर कार्यालय , अलवर , जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय , जिला उच्च शिक्षा केन्द्र एवं मत्स्य विश्वविद्यालय , अलवर से किया गया है ।

विधि तंत्र :

प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का तालिकाओं , मानचित्रों एवं सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय सूत्रों का उपयोग किया गया।

प्रशासनिक ईकाईयां :–

अलवर जिला वर्तमान में 14 उपखण्डों , 16 तहसीलों व 14 पंचायत समितियों में बँटा हुआ है। जिला कलक्टर एवं जिला दण्डनायक जिले का सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी है जो कि (न्याय , कानून व्यवस्था) एवं विकास कार्यो का सर्वोच्च अधिकारी है। इसी प्रकार प्रत्येक उपखण्ड के लिए उपखण्ड अधिकारी एवं तहसील के लिए तहसीलदार जिन्हे कार्यकारी दण्डनायक के अधिकार प्राप्त है जिले में कुल 532 पटवार मण्डल है। जिले में 14 पंचायत समितियों का गठन किया गया है। जिला परिषद का प्रभारी एवं मुखिया जिला प्रमुख होता है। जिसको जिला परिषद के सदस्य चुनते है। जिला परिषद के सदस्यों को जनता चुनती है। जिला स्तर पर शीर्ष संस्था जिला परिषद के प्रशासनिक नियन्त्रक मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। पंचायत समिति द्वारा खण्ड स्तर पर सभी प्रकार के विकास कार्यक्रम को क्रियान्वयन कर कार्य को विकास अधिकारियों के माध्यम से सम्पन्न करवाते है। प्रधान प्रत्येक पंचायत समिति का निर्वाचित मुखिया होता है। विकास अधिकारी पंचायत समिति का नियन्त्रक अधिकारी होता है। जिले की 14 पंचायत समिति के अधीन 512 ग्राम पंचायते है। पंचायत समितिवार पंचायतों की संख्या एवं सम्बन्धित तहसील का विवरण निम्नलिखित अनुसार है।

अलवर जिले की जनसंख्या :–

अलवर जिले का क्षेत्रफल 8380 वर्ग कि . मी . है। जनगणना 1991 के अनुसार 2296580 जनसंख्या है , जो राज्य की कुल 44005990 जनसंख्या की तुलना में 5.15 प्रतिशत है। जिले में 1221534 पुरूष तथा 1075046 स्त्रियाँ है। जिले के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र में क्रमशः 1976293 एवं 320287 व्यक्ति निवास करते है। जनगणना 2001 के अनुसार जिले में कुल 2992592 जनसंख्या है। जिनमें 2557653 ग्रामीण तथा 434939 नगरीय जनसंख्या है। इस प्रकार 1536752 पुरूष तथा 1405840 स्त्रियाँ है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले में कुल जनसंख्या 3674179 है जिनमें 3019728 ग्रमीण व 654451 नगरीय जनसंख्या है इस प्रकार 1939026 पुरूष तथा 1735153 स्त्रियॉ है।

(अ) जनसंख्या वृद्धि दर :–

जिले में जनसंख्या वृद्धि दर 2011 के अनुसार + 22.8 प्रतिशत है। जो कि 2001 में + 30.23 प्रतिशत थी यहा जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होने के लिए अनेक कारक उत्तरदायी है। जैसे शादी की औसत आयु का नीचा पाया जाना, कुल महिलाओं मे शादीशुदा महिलाओ का ऊँचा अनुपात, परिवार नियोजन अपनाने वाले दम्पतियो का कम अनुपात होना, सामाजिक पिछड़ापन, निरक्षरता, निर्धनता एवं निम्न जीवन स्तर मनोरंजन के साधनों का अभाव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं में गुणात्मक विकास की कमी आदि ।

1 मार्च 2001 के सूर्योदय के समय जिले की जनसंख्या 29,90,862 थी, जिसमें पुरूषों की संख्या 15,85,046 एवं स्त्रियों की संख्या 14,05,816 थी। 2001 की जनसंख्या आँकड़ों के अनुसार जिले की जनसंख्या 86.05 प्रतिशत व्यक्ति 1947 आबाद ग्रामों निवास करते है। केवल 13.95 प्रतिशत व्यक्ति ही जिले के आठ नगरीय केन्द्रों में रहते है। जिले में 45 गैर आबाद ग्राम हैं। 1 मार्च, 2011 में जिले की जनसंख्या में 6,83,317 की वृद्धि हो गई अथवा जनसंख्या में 22.8 प्रतिशत वृद्धि हो गई है जिससे अलवर जिले की कुल जनसंख्या 36,74, 179 हो गई इसमें 19,39,026 पुरुषों की संख्या एवं 1735153 स्त्रियों की जनसंख्या है। इसी के साथ गाँवों व शहरों की जनसंख्या बढकर क्रमशः 30,19,728 एंव 6,54,451 हो गई। अलवर जिले में जनसंख्या की दस वर्षीय वृद्धि को आरेख व तालिका में दर्शाया गया है।

तहसील स्तर पर 2011 में तिजारा तहसील में सर्वाधिक वृद्धि दर 29.20 प्रतिशत दर्ज हुई, जबकि अलवर, रामगढ़, लक्ष्मणगढ तहसीलों में यह वृद्धि दर क्रमशः 19.23, 21.37, 16.27, 37.05 प्रतिशत रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृद्धि दर अधिक रही एवं नगरीय क्षेत्रो में कम रही, लेकिन अलवर तहसील व तिजारा में नगरीय क्षेत्र में दशकीय वृद्धि दर अधिक पाई गई है।

सारणी सँख्या :– 1 अलवर ज़िले में जनसंख्या वृद्धि (1931–2011)

वर्ष	पुरूष	स्त्री	योग	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि (+) या कमी (-)
1931	406261	362286	768547	-	-
1941	446387	397398	843785	+75238	+9.78
1951	454557	407436	861993	+18208	+2.16
1961	576234	513792	1090026	+228033	+26.45
1971	737373	653789	1391162	+301136	+27.63
1981	927693	827882	1755575	+364413	+26.19
1991	1221534	1075046	2296580	+541005	+30.82
2001	1586752	1405840	2992592	+696012	+30.31
2011	1939026	1735153	3674179	+683317	+22.84

स्त्रोतः–जनगणना विभाग, जयपुर (2011)

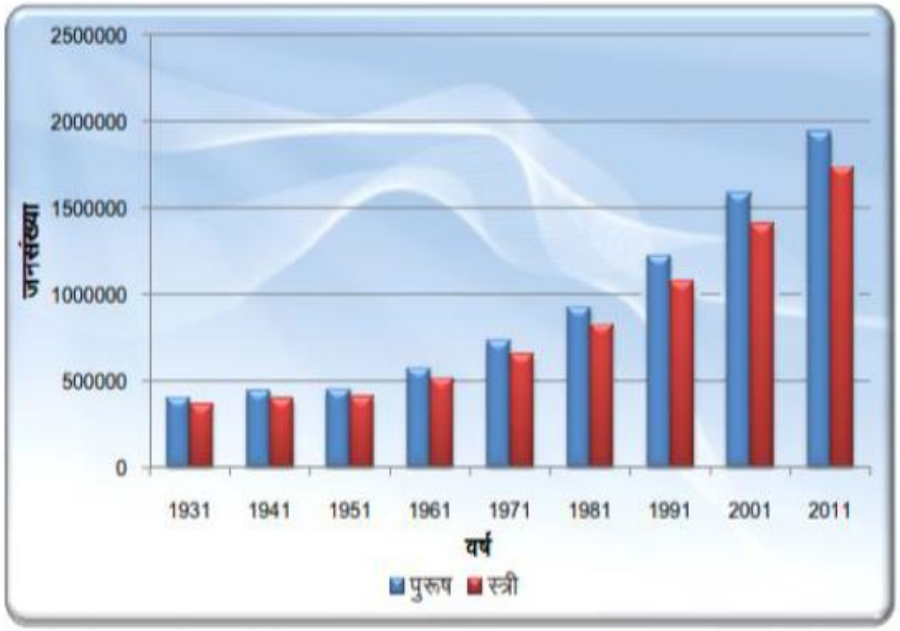

(ब) जनसंख्या घनत्व :–

जनसंख्या घनत्व प्रतिवर्ग कि.मी. में निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते है। राजस्थान की घनी जनसंख्या वाले पूर्वी मैदानी जिले आते है। 2011 में अलवर जिला का घनत्व 438 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. से राजस्थान में चौथे स्थान पर आता है। जिले की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। इसलिए जलापूर्ति, समतल धरातल का प्रभाव जनसंख्या के घनत्व पर पड़ता है। जो वर्ष 2001 के घनत्व 357 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से 81 अधिक है। 2011 के जनसंख्या के अनुसर जिले की तहसीलों का घनत्व बहरोड़, मुण्डावर, रामगढ, लक्ष्मणगढ, कठुमर में 400 से 500 के मध्य व कोटकासिम, किशनगढवास व बानसूर में 300 से 400 के मध्य राजगढ मे 246 व थानागाजी में सबसे कम 219 और तिजारा व अलवर तहसील में सबसे अधिक क्रमशः 589 व 776 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है।

साक्षरता :–

जनगणना 2001 में जिले की कुल जनसंख्या 2992592 का 61.71 प्रतिशत व्यक्तियों को साक्षर माना गया जबकि जनगणना 1991 में राजस्थान राज्य की कुल जनसंख्या का 38.55 प्रतिशत साक्षर थी। जबकि जनगणना 2001 में राज्य की 60.4 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर मानी गयी है , राज्य साक्षरता दर में 75.7 प्रतिशत पुरूष तथा 43.9 प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर है। अलवर जिले की जनगणना 2001 के अनुसार 61.7 प्रतिशत साक्षरता दर है , जिसमें 78.1 प्रतिशत पुरूष तथा 43.3 प्रतिशत स्त्रियॉ साक्षर है। जिले की 2992592 जनसंख्या में से 1488281 व्यक्ति साक्षर में से 998253 पुरूष तथा 490028 स्त्रियाँ साक्षर है। अलवर जिले में जनगणना 2011 के अनुसार 70.72 प्रतिशत साक्षरता दर है , जिसमें 83.75 प्रतिशत पुरूष तथा 56.25 प्रतिशत स्त्रिया साक्षर है।

शिक्षा विकास :–

जिले में शिक्षा कार्य की जिम्मेदारी शिक्षा विभाग द्वारा पूरी की जा रही है। शिक्षा विभाग अलवर जिले में पढने वाले छात्र एवं छात्राओं को शिक्षा देकर उनको भविष्य में उज्जवल कार्यो के लिये एंव देश की सेवा करने के लिये तैयार करता है। शिक्षा के माध्यम से लोगो से लोगो की बुद्धिमता को बढावा देना भी है तथा जिले राज्य देश के विकास में मददगार हैं। युवक – युवतियो को शिक्षा के माध्यम से राज्य के लिये डॉक्टर , इंजीनियर , प्रशासनिक अधिकारी व तकनीकी शिक्षा से तकनीकी रोजगार हेतु तैयार करना है।

जिला साक्षरता एवं सतत् शिक्षा :–

साक्षर भारत मिशन 2017 – 2018 प्रधानमंत्री , भारत सरकार द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितम्बर 2009 के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में एक समारोह में साक्षर भारत कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम में उन सभी 15 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के स्त्री – पुरुषों को सम्मिलित किया गया जो अक्षर ज्ञान से वंचित रह गये थे।

साक्षरता में अलवर जिले की प्रगति का परिदृश्य :–

वर्ष 2017–18 में जिले को 25000 असाक्षरों को साक्षर कर बुनियादी परीक्षा दिलवाने का लक्ष्य निदेशालय साक्षरता एवं सतत शिक्षा राजस्थान जयपुर द्वारा दिया गया था। साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षण संस्थान वर्ष में दो बार बुनियादी साक्षरता परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। माह अगस्त 2017 की परीक्षा में 13770 परीक्षार्थी सम्मिलित हुये जिसमें से 12452 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुये तथा मार्च 2018 में 8243 परीक्षार्थी सम्मिलित हुये जिसमें से 7197 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुये। जिले के 14 ब्लॉक में यह कार्यक्रम संचालित है। प्रत्येक ग्राम पंचायत पर एक महिला तथा एक पुरुष को अंशकालिक संविदा पर रखा जाता है जो निरक्षरों को साक्षर करने के साथ – साथ महात्मा गांधी सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन करते हैं। ब्लॉक स्तर पर सूचना संकलित करने एवं कार्यक्रम को सुचारु रुप से संचालित करने हेतु एक ब्लॉक समन्वयक की नियुक्ति की गई है। जिले सहित समस्त 14 ब्लॉक एवं ग्राम पंचायत स्तर के बैंक खाते एस . बी . आई . बैंक सांगानेरी गेट जयपुर में खुलवाये गये हैं। जमीनी स्तर पर आज साक्षर भारत कार्यक्रम की लोकप्रियता एवं सफलता के पीछे पंचायत राज व्यवस्था , सरकारी मशीनरी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं का बेहतर तालमेल है जो कार्यक्रम को गति प्रदान कर रहे हैं।

साक्षर भारत कार्यक्रम के तहत चयनित आदर्श सांसद ग्राम योजना में ग्राम पंचायत तसींग (बहरोड़) एवं रोडवाल (नीमराणा) में शत – प्रतिशत साक्षर करने का लक्ष्य अर्जित कर लिया गया हैं।

अध्ययन क्षेत्र में शिक्षण संस्थानों का वार्षिक वितरण :–

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में शिक्षण संस्थानों का वार्षिक वितरण 2001 से 2020 तक सारणी सँख्या 3.5 में प्रदर्शित की गई है जिसके अध्ययन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में प्राथमिक विद्यालय 2348 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 2612 हो गए इसी प्रकार 2010–11 में घटकर 1551 रह गए यह कमी 1061 की थी जिसका मूल कारण सरकारी विद्यालयों में घटती छात्र व छात्राओं की सँख्या व निजी विद्यालय में वृद्धि होना है इसी प्रकार वर्ष 2015 – 16 में पुनः घटकर 1410 रह गई वर्ष 2019 – 20 में पुनः घटकर 1322 रह गई जो वर्ष 2015 – 16 की तुलना में 88 कम हो गई जिसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के प्रयास में कमी , सुविधाओं में कमी , शिक्षकों का स्थान्तरण होना है ।

सारणी सँख्या :- 2

अलवर ज़िले में शिक्षण संस्थानों की वार्षिक स्थिति (2001 से 2020)

क्रम सँख्या	विद्यालय	2001 - 02	2005 - 06	2010 -11	2015 - 16	2019- 20
1	प्राथमिक विद्यालय	2348	2612	1551	1410	1322
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय	1536	2087	1802	2532	2123
3	माध्यमिक विद्यालय	387	534	574	578	695
4	उच्च माध्यमिक विद्यालय	436	694	513	960	1278
5	सामान्य शिक्षा कॉलेज	15	32	67	162	205
6	व्यवसायिक शिक्षा कॉलेज	14	17	32	105	142
07	विश्वविद्यालय	0	0	0	02	05
कुल योग		**4736**	**5976**	**4550**	**5749**	**5770**

स्त्रोत :- कार्यालय , जिला शिक्षा अधिकारी, अलवर

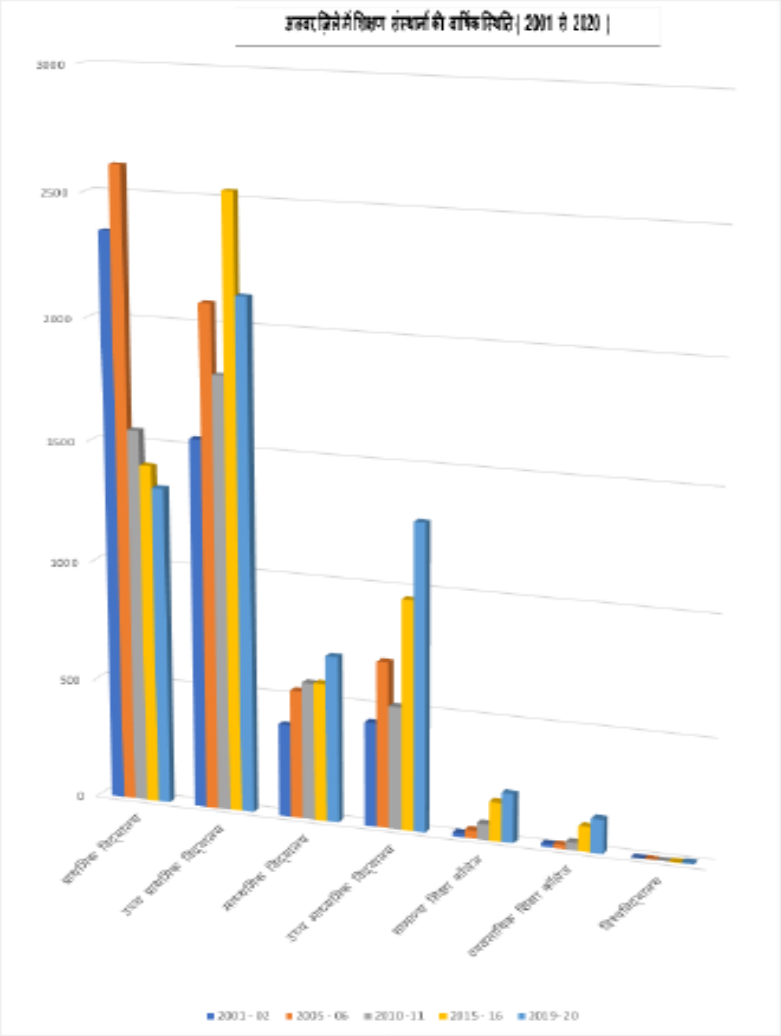

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में उच्च प्राथमिक विद्यालय 1536 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 2087 हो गए यह वृद्धि 551 की थी इसी प्रकार 2010–11 में घटकर 1802 रह गए यह कमी 285 की थी जिसका मूल कारण सरकारी

विद्यालयों में घटती छात्र व छात्राओं की सँख्या व निजी विद्यालय में वृद्धि होना है इसी प्रकार वर्ष 2015 – 16 में पुनः बढ़कर 2532 हो गई जिसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालय खोलने हेतु सरकार के प्रयास में वृद्धि , सुविधाओं में वृद्धि व छात्रों के नामांकन में वृद्धि होना है । वर्ष 2019 – 20 में पुनः घटकर 2123 हो गई जो वर्ष 2015 – 16 की तुलना में 409 कम थी जिसका मुख्य कारण उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक व अन्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों में समायोजन करना है ।

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में माध्यमिक विद्यालय 387 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 534 हो गए यह वृद्धि 147 की थी इसी प्रकार 2010–11 में पुनः बढ़कर 573 हो गए यह वृद्धि 40 की थी जिसका मूल कारण उच्च प्राथमिक सरकारी विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत करना था । इसी प्रकार वर्ष 2015 – 16 में बढ़कर 578 हो गई यह वृद्धि 05 की थी । वर्ष 2019 – 20 में पुनः बढ़कर 695 रह गई यह वृद्धि 117 की थी जिसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के प्रयास से उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक में क्रमोन्नत किया गया ।

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में उच्च माध्यमिक विद्यालय 436 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 694 हो गए यह वृद्धि 298 की थी इसी प्रकार 2010–11 में पुनः घटकर 513 रह गए यह कमी 181 की थी जिसका मूल कारण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी , शिक्षकों का स्थांतरण होना परिणामस्वरूप अध्यापन कार्य में कमी आना था । इसी प्रकार वर्ष 2015– 16 में पुनः बढ़कर 960 हो गई यह वृद्धि 447 की थी इसी प्रकार वर्ष 2019 – 20 में पुनः बढ़कर 1278 हो गई यह वृद्धि वर्ष 2015–16 की तुलना में 318 अधिक थी जिसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के प्रयास से माध्यमिक विद्यालयों को भी उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत किया गया । राज्य

सरकार ने ज़िले के शैक्षणिक विकास हेतु शिक्षक उपलब्ध करवाने के साथ साथ आधारभूत सुविधाओं का भी विकास किया।

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में सामान्य शिक्षा कॉलेज 15 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 32 हो गए यह वृद्धि 17 की थी इसी प्रकार 2010–11 में पुनः बढ़कर 67 गए यह वृद्धि 35 की थी जिसका मूल कारण वर्ष 2007 – 08 में तत्कालीन राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नए सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों को मान्यता प्रदान की । इसी प्रकार वर्ष 2015 – 16 में पुनः बढ़कर 162 हो गए यह वृद्धि लगभग तीन गुना थी इसी प्रकार वर्ष 2019 – 20 में पुनः बढ़कर 205 हो गए यह वृद्धि वर्ष 2015–16 की तुलना में 43 अधिक थी जिसका मुख्य कारण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के प्रयास से नए महाविद्यालय खोलना था । राज्य सरकार ने ज़िले के शैक्षणिक विकास हेतु शिक्षक उपलब्ध करवाने के साथ साथ आधारभूत सुविधाओं का भी विकास किया।

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में वर्ष 2001–02 में व्यवसायिक शिक्षा कॉलेज 14 थे जो वर्ष 2005–06 में बढ़कर 17 हो गए यह वृद्धि 03 की थी इसी प्रकार 2010–11 में पुनः बढ़कर 32 हो गए यह वृद्धि 15 की थी इसी प्रकार वर्ष 2015 – 16 में पुनः बढ़कर 105 हो गई यह वृद्धि लगभग पाँच गुना थी । वर्ष 2019 – 20 में पुनः बढ़कर 142 हो गई यह वृद्धि लगभग दस गुना थी जो कि वर्ष 2015–16 की तुलना 37 अधिक थी जिसका मुख्य कारण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सरकार के प्रयास से इंजीनियरिंग कॉलेज , औद्योगिक प्रशिक्षण कॉलेज , मेडिकल कॉलेज , नर्सिंग कॉलेज व शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय को मान्यता प्रदान करना रहा । राज्य सरकार ने ज़िले के शैक्षणिक विकास हेतु शिक्षक उपलब्ध करवाने के साथ साथ आधारभूत सुविधाओं का भी विकास किया।

अध्ययन क्षेत्र अलवर ज़िले में 2015–16 में 02 विश्वविद्यालय थे जो 2019–20 में बढ़कर 05 विश्वविद्यालय हो गए जिसमें 02 सरकारी व 03 गैर सरकारी हैं ये विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं जिससे उच्च शिक्षा , तकनीकी शिक्षा , चिकित्सा शिक्षा व शोध कार्यों को बढ़ावा मिल रहा है ।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का महत्व :–

शिक्षा एवं प्रशिक्षण द्वारा समाज को निम्न लाभ प्राप्त होते हैं।

(1) शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के साथ ही उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को (ैचपससवअमत) लाभ प्राप्त होते है। पढ़े – लिखें परिवारों में कार्य कर प्रति दृष्टिकोण धनात्मक रूप से बदलता है।

(2) शिक्षा के द्वारा एक विकास करती अर्थव्यवस्था को प्रशिक्षित जनशक्ति प्राप्त होती है।

(3) शिक्षा संभावित क्षमताओं एवं सृजन की प्रक्रिया को बढ़ाती है।

(4) ऐसा वातावरण निर्मित होता है जो विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में खोज व नवप्रवर्तन को प्रोत्साहन दे।

(5) शिक्षा सामाजिक अनुशासन को बढ़ावा देती है व कल्याण की भावना से प्रेरित हो स्वैच्छिक रूप से कार्यरत रहने का दृष्टिकोण उपजता है।

(6) शिक्षा राजनीतिक स्थायित्व को बनाए रखने में प्रेरक भूमिका प्रस्तुत करती है। शिक्षित जनमानस एक सुदृढ़ एवं स्थायी नेतृत्व के द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों के प्रति जागरूक बनाती है।

(7) शिक्षा के प्रचार प्रसार से कार्य व आराम दोनों पक्षों को समान रूप से महत्व दिया जाता है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 2005 – 06 में प्राथमिक , उच्च प्राथमिक विद्यालयों की सँख्या अधिक थी लेकिन 2019–20 में इसकी सँख्या कम हो गई जबकि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सँख्या में वृद्धि हुई इसी अवधि में उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार हुआ है जहाँ वर्ष 2005–06 में महाविद्यालय , व्यवसायिक कॉलेज व विश्वविद्यालय शून्य थे अब वहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार के द्वारा नए महाविद्यालय व विश्वविद्यालय खोले गए हैं जिससे ज़िले का शैक्षणिक विकास के साथ साथ रोजगार के अवसरों में वृद्धि होने से सामाजिक व आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिला है । अलवर जिले में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा विकास के अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अलवर जिले की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि

होती रही है। जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ सामाजिक , आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास भी हुआ है। जिले में साक्षरता विकास कार्यक्रम के तहत बुनियादी शिक्षा का विकास हुआ है। साक्षरता विकास कार्यक्रम की लोकप्रियता एवं सफलता के पीछे पंचायत राज व्यवस्था , सरकारी मशीनरी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं का बेहतर तालमेल है जो कार्यक्रम को गति प्रदान कर रहे हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1. कार्यालय , जिला कलेक्टर भू अभिलेख , अलवर।

2. जनगणना प्रतिवेदन , जिला अलवर , 2011

3. जिला सांख्यकीय रूपरेखा , जिला अलवर , 2021

4. जनसँख्यकीय विभाग , जिला अलवर ।

5. आर्थिक व सामाजिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन , जिला अलवर ।